हमारी सभा

हमारी सभा

"उदय सामुदायिक पाठशाला" में जब बच्चे सुबह अ
सर्वप्रथम सभा कार्य होता है। इसमें सभी बच्चे एक साथ बै
दिन की शुरूआत करते है। हमारी सभा बच्चों की रूचियों क
रखकर ही होती है, ताकि दिनभर एक खुशनुमा माहौल बन
बच्चे हंसते खेलते रहे। हमारी सभा में कहानी , नाटक, बाल
कुछ बौद्धिक खेल होते है, जिसमें बच्चे अपनी पूरी रूचि
और आनंद महसूस करते है बालगीत सामान्यतः बच्चों की
आने लायक होते है, ये वो गीत होते है जिसे वे बचपन से
आए है और उदय में इन गीतों को ताल और लय के सा
उन्हें और भी आनंद मिलता है। इन गीतों के साथ ही वे
को भी सीखते है, और उसे पूरे हावभाव के साथ गाते है अ
आनंद लेते है।

सभा में कहानियां भी बच्चों की सुनी हुई, पढ़ी हुई य
द्वारा लिखित होती है, जिसे बच्चों या शिक्षकों द्वारा सुनाय

साथ ही कहानियों पर नाटक भी किया जाता है इसमें बच्चे स्वय
तय करके नाटक का मंचन करते है जिससे उनकी स्वभ
विशेषताएं भी देखने को मिल जाती है।

बौद्धिक खेलों में पहेलियां तथा मूकाभिनय को भी शामिल
जाता है। बच्चे अपनी रोजमर्रा के काम में लाई जाने वाली अथवा
द्वारा रचित नई पहेलियों को समुह में रखते है, इन पहेलियों का
या तो समूह देता है या फिर अगले दिन वे स्वयं देते है, इस
बच्चे प्रत्येक दिन एक बाल बुक बनाते है जिसे सभा में सबके
पढ़ा जाता है। इसमें (बाल बुक) बच्चों द्वारा रचित कहानियॉ, क
एवं पहेलियॉ होती है। सभा में बच्चों के द्वारा संचालित समाचा
को भी पढा जाता है जिससे बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति में
होता है। साथ ही उनका शब्दकोष भी बढता है तथा गाना
नाचने, ढोलक बजाने जैसी कलाओं का भी विकास होता है

है इस प्रकार सभा में बच्चों को आनंद मिलता है और रचनात्मक कलाओं को बढावा भी मिलता है।

सामान्यतः अन्य स्कूलों में दिन की शुरूआत प्रार्थना और से होती है, इस समय बच्चों को बिल्कुल चुपचाप खड़े होना और जो कुछ उन्हें कहने को कहा जाता है, वो सब वे एक सा है, पर क्या वो इनका अर्थ समझते है? क्या वे इन बातों क जहन में उतार पाते है? अगर हम अपने स्कूल के दिनों को य तो हम पाएंगे कि हमारा जबाव है "ना" हमें भी इन प्रार्थना प्रतिज्ञाओं में कोई रूचि नहीं हुआ करती थी। प्रार्थना में ब विद्या की देवी से विद्या मांगना सीखाया जाता है, जबकि सच्च है कि विद्या मांगने से नहीं बल्कि मेहनत व लग्न से आती है। प्रार्थना से बच्चों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर भी फर्क पड़ता है , तो यह है कि बच्चों को सबसे ज्यादा हमारी बातें, हमारे प्रभावित करते है। ऐसा भी देखा गया है, कि ये प्रार्थना एवं सिर्फ बच्चों के लिए ही बनाई गई है, जबकि अगर ये इतनी ही है तो इसे हर कार्यालय में लागू होना चाहिए।

सभा में व्यवस्था संबंधी चर्चा भी होती है और इन च
सभी बच्चे एवं शिक्षक भाग लेते है और चर्चा के अन्त में सभी
मत होता है जिसे अंतिम निर्णय के रूप में लिया जाता है।

हमारी सभा भी ग्राम सभा की तरह ही होती है, हमारे
भी सरपंच की तरह एक अध्यक्ष और तीन सदस्य होते है
चुनाव बच्चों के द्वारा होता है, लेकिन हमारी स्कूल पंचा
पंचायत की तरह कार्य नहीं करती है, स्कूल में अध्यक्ष और
सदस्य किसी भी समस्या पर बिना किसी की राय के निर्णय
सकते है क्योंकि निर्णय लेने का हक सभी बच्चों एवं शिक्षक
होता है। स्कूल पंचायत बाल बुक तथा समाचार पत्रिका (उदय
के संपादक के रूप में कार्य करती है, प्रत्येक गांव के लि
पत्रकार होते है, जो आस–पास के तथा गांव के समाचार
मण्डल को देते है। यह कमेटी इन समाचारों से उदय
निकालती है। इसी प्रकार बच्चों द्वारा लिखित कहानी, कवि
चुटकुलों को भी बाल बुक में लिखा जाता है, एवं समूह में प

जिस पर सिर्फ शिक्षक ही कार्य कर सकता है, इस व्यवस्था के अन्तर्गत बच्चे एक निश्चित पंक्ति में बैठते है, और यदि उन्हें अपनी कुर्सी छोड़ कर कहीं और बैठना हो तो इसके लिए शिक्षक की आज्ञा लेनी पड़ती है। इस तरह पंक्ति में बैठना बच्चों के लिए एक कठोर नियम सा बन चुका है।

जबकि हमारा मानना है कि ज्यादातर बच्चे स्वयं ही व्यवस्था पसंद होते है किन्तु कक्षा की व्यवस्था उनके द्वारा स्थापित होनी चाहिए। बच्चों को सदैव एक सी रहने वाली आरोपित व्यवस्था के अन्दर रहना पसंद नहीं होता इससे वे पढ़ाई में रूचि तो नहीं ही लेते है साथ ही इससे भागते भी है।

उदाहरणस्वरूप :—बच्चों को गणित एवं विज्ञान के विषय के लिए अलग—अलग बैठना पसंद होता है, इन विषयों के लिए जहॉ हर बच्चा अलग कोशिश करना चाहता है वहीं भाषा की पढाई वे एक घेरे में बैठकर करना ज्यादा पंसद करते है।

हमारे स्कूल में कक्षा व्यवस्था नहीं है।

हमारे स्कूल में कक्षा व्यवस्था नहीं है।

आज की मुख्यधारा की शिक्षा व्यवस्था में यदि हम किसी भी स्कूल में कक्षा अध्ययन की दृष्टि से नजर डाले तो हम पाएंगे कि यह व्यवस्था एक कक्षा के बच्चों को अन्य कक्षाओं के बच्चों से एवं अध्यापकों से अलग करती है, एक ही कक्षा में होने के कारण बच्चों का परिचय क्षेत्र केवल अपनी आयु तक ही सीमित होंकर रह जाता है। अतः यह व्यवस्था उनके मैत्री संबंधों पर प्रभाव डालती है, जिसका परिणाम यह होता है कि बच्चे अपने से बड़े उम्र के बच्चों के साथ मित्रता करने से झिझकते है, और अपने से नीचे क्लास के बच्चे उन्हें बहुत ही छोटे दिखाई देते है। इसी से अलग यदि हम इन बच्चों को उनके परिवारिक माहौल में देखे तो हम पाएंगे कि मित्रता करते समय इन बच्चों पर आयु की भिन्नता का कोई असर नहीं पड़ता, खासतौर पर खेलते वक्त ये बच्चे आयु की भिन्नता को कोई महत्व नहीं देते है।

इन्ही बातों को ध्यान में रखते हुए "उदय सामुदायिक पाठशाला" में कक्षा व्यवस्था को नहीं अपनाया गया है। हमारे यहां एक ही शिक्षक

के पास कक्षा एक से पांच तक के बच्चे पढ़ते हुए मिल जाएंगे, क्योंकि हमारा मानना है कि हर बच्चे की सीखने की क्षमता अलग–अलग होती है।

उदाहरणस्वरूप :– यदि कोई बच्चा गणित में कक्षा चार की पढ़ाई पढ़ता है, तो वहीं बच्चा विज्ञान में कक्षा दो या तीन की पढ़ाई भी पढ़ सकता है इस तरह बच्चों में बड़े छोटे का कोई भेद नहीं रह जाता और साथ ही आयु की भिन्नता भी कोई दुष्प्रभाव नहीं डाल पाती है। साथ ही हमारा यह भी मानना है, कि छोटे बच्चों का बड़े बच्चों के साथ परिचय एवं कार्य करने का अनुभव आवश्यक है। हमारी व्यवस्था के अन्तर्गत बच्चों को अपने से बड़े एवं छोटे बच्चों के साथ मित्रता करने में कोई भी कठिनाई नहीं होती है।

बच्चों के लिए अमूमन कक्षा व्यवस्था में एक और चीज यह देखने को मिलती है, कि कक्षा का एक निश्चित ढांचा होता है, जिसके अन्तर्गत बच्चों के लिए डेस्क एवं कुर्सियां और शिक्षको के लिए ऊँची कुर्सी एवं मेज होती है, कक्षा की एक दीवार पर ब्लैक बोर्ड होता है,

"उदय सामुदायिक पाठशाला" में बच्चों की परीक्षा नहीं ली जाती है, बल्कि उनका मुल्यांकन हम हर रोज करते है, इस प्रकिया में हम बच्चों को काम दे देते है और फिर उन्हें देखते रहते है, कि कौन सा बच्चा क्या कर रहा है। बच्चा काम करने में किस जगह समस्या महसूस कर रहा है, जिस जगह बच्चे को समस्या आ रही है उस समस्या को सुलझाने का प्रयास शिक्षक और बच्चे मिलकर करते है, और जब तक समस्या हल न हो जाए तब तक इस पर काम किया जाता है। इस तरह अगले दिन की कार्ययोजना भी शिक्षक बच्चों का समस्या को ध्यान में रखकर ही बनाता है। इस तरह "उदय सामुदायिक पाठशाला" में बच्चों का मूल्यांकन हर रोज होता है, परन्तु वर्ष के अन्त में लिया जाने वाला मूल्यांकन समुदाय एवं स्कूल दोनों मिलकर लेते है। इस प्रकिया में समुदाय के लोगों को यह बता दिया जाता है कि बच्चों के साथ क्या काम किया गया है और वे (समुदाय एवं स्कूल) उसी के आधार पर बच्चों, शिक्षकों एवं पाठशाला का मूल्यांकन करते है।

हमारे यहाँ परीक्षा नहीं होती है

हमारे यहॉ परीक्षा नहीं होती है

सामान्य रूप से सभी स्कूलों में परीक्षा बच्चों के मूल्यांकन करने के लिए होती है। इस प्रक्रिया में स्कूल के शिक्षक एक प्रश्न पत्र तैयार करते है, जो निश्चित पाठ्यपुस्तक से होता है। जो बच्चा इन प्रश्नों को हल कर देता है उसे सफल घोषित करके दूसरी कक्षा में भेज दिया जाता है, जबकि वहीं अगर किसी की अवधारणाएं स्पष्ट है, परन्तु किसी कारणवश इन प्रश्नों को हल नहीं कर पाता तो उसे असफल घोषित कर दिया जाता है। इस प्रक्रिया में सफल होने के लिए बच्चे शिक्षकों के द्वारा दिए गए कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों को रट लेते है, इस तरह की व्यवस्था का परिणाम यह होता है, कि वो परीक्षा में सफल तो हो जाते है परन्तु शिक्षा का जो मुख्य उद्देश्य है वो पूरा नहीं हो पाता है।

परीक्षा में जिस बच्चे के अधिक अंक आते उसे अच्छा बताया जाता है, वहीं जिस बच्चे के कम अंक आते है उसे कमजोर कहा जाता है, जिसके कारण बच्चे एक दूसरे से अधिक अंक लाने की होड में सदा लगे रहते है। इसका परिणाम यह होता है कि जब कभी बच्चे ये महसूस करते

है, कि अब वो और अधिक अंक नहीं ला सकते या फिर उनकी मेहनत व्यर्थ है तो वे पढ़ाई छोड़ देते है।

परीक्षा का एक प्रभाव बच्चों की मानसिकता पर भी पड़ता है, जब कभी भी बच्चों से उनकी परीक्षा के बारे में पूछा जाता है तो वे डर जाते है साथ ही वे हमेशा इस विषय को टालना चाहते है, परीक्षा के शुरू होने पर वे एक भय के वातावरण में जीते है, और जल्द से जल्द इसके खत्म होने का इंतजार करते है। परीक्षा के दौरान वे हमेशा अपने पाठ्य पुस्तक को लेकर बैठे रहते है और उसे रटते रहते है। इस प्रक्रिया के कुछ अपने ही नियम होते है जैसेः– प्रश्न पत्र को एक निश्चित समय के अदंर ही पूरा करना होता है, परीक्षा के दौरान दो बच्चे आस–पास नहीं बल्कि दूर बैठते है, बच्चों के प्रश्नपत्र हल करते वक्त कुछ शिक्षक उनके आस–पास टहलते रहते है, ताकि वे नकल न करने पाएं।

इस पूरी प्रक्रिया में एक ऐसा माहौल तैयार होता है, जो किसी भी बच्चे को डरा देने वाला होता है और इसके परिणामस्वरूप बच्चे इस पूरी प्रक्रिया में एक गहरे मनौवैज्ञानिक दबाव से होकर गुजरते है और बच्चों की पूरी पढ़ाई का मुख्य उद्देश्य परीक्षा में पास करना ही रह जाता है।

इसी से हटकर हमारे "उदय सामुदायिक पाठशाला" में हैडमास्टर नामक व्यक्ति के लिए कोई भी स्थान नहीं है, कारण "उदय सामुदायिक पाठशाला" हमारी अपनी पाठशाला है और इसके लिए हम सभी एक टीम के रूप में काम करते है। हमारे स्कूल में यदि किसी शिक्षक को समस्या हो रही हो तो उसकी [illegible] करने के लिए दूसरे शिक्षक हमेशा तैयार रहते है। हमारे स्कूल में किसी भी तरह के नियम की आवश्यकता नहीं होती है, परन्तु यदि कभी इसकी जरूरत भी पड़ जाए तो नियम बनाने का अधिकार सिर्फ शिक्षक को ही नहीं बल्कि बच्चों को भी होता है। बच्चे और शिक्षक एक साथ मिलकर नियम बनाते है और उसे मानते है। परन्तु जिन विषयों में बच्चों की भागीदारी नहीं होती है, वहॉ नियम सभी शिक्षक आपस में मिलकर बनाते है। और उसे मन से स्वीकार करते है, क्योंकि ये नियम उन पर थोपा नहीं जाता है। शाला में बच्चों के साथ क्या और किस तरह काम करना है, किन तरह की आवश्यकताएं हैं, इन सबकी जिम्मेदारी शिक्षक समूह आपसी विचार–विमर्श से लेता है। हमें नहीं लगता है कि एक व्यक्ति की निर्णय क्षमता सामुहिक निर्णय से बेहतर होती है।

हमारे यहॉ हैडमास्टर नहीं है।

हमारे यहॉ हैडमास्टर नहीं है।

"हैडमास्टर", इस शब्द को सुनते ही हमारे सामने एक ऐसे व्यक्ति का चेहरा आ जाता है, जो मुख्यधारा की स्कूलों में सबसे ऊँचे पद पर विराजमान होता है। यह एक गम्भीर व्यक्ति होता है, जिससे बच्चें ही नहीं बल्कि शिक्षक भी घबराते हैं। इनका काम उच्च कक्षाओं के बच्चों को पढ़ाना, नियम बनाना और बच्चों को ही नहीं बल्कि शिक्षकों भी अनुशाशित रखना होता है।

हर रोज "हैडमास्टर" आधे समय के बाद राउंड पर निकलता है, कि कहीं कोई बच्चा या शिक्षक कक्षा के बाहर तो नहीं है। इसे देखते ही बच्चे एवं शिक्षक कक्षा की तरफ भाग खड़े होते है, और यदि कोई बच्चा या शिक्षक हैडमास्टर की नजर में आ जाता है, तो उस बच्चे को वहीं दण्डित किया जाता है अथवा शिक्षक को भी वहीं फटकार सुननी पड़ती है। इससे स्कूल में एक ऐसा दहशत का माहौल बन जाता है,

कि शिक्षक स्कूल को अपना नहीं बल्कि हैडमास्टर का मानने लगते है। ऐसी स्थिति में बच्चों को जैसे–तैसे पढ़ाना एवं महीने के अन्त में अपना वेतन पाना ही उनका परम उद्देश्य रह जाता है। शिक्षक स्कूल को अपना समझ कर स्कूल की भलाई और तरक्की के लिए कोई भी कोशिश नहीं करते है। इस तरह की शासन व्यवस्था का एक परिणाम यह होता है कि जिस दिन हैडमास्टर स्कूल नहीं आता है, उस दिन स्कूल में एक अलग ही माहौल देखने को मिलता है। शिक्षक पूरी तरह से अपनी मर्जी के मालिक होते है, बच्चों को उस दिन पढ़ाना या ना पढ़ाना उनकी इच्छा पर निर्भर करता है, और ऐसा करते समय उन्हें जरा भी आत्मग्लानी नहीं होती है। इसका कारण है कि वे स्कूल को अपना नहीं बल्कि हैडमास्टर का मानते है। उनका मानना है कि स्कूल की तरक्की की पूरी जिम्मेदारी उनकी नहीं बल्कि हैडमास्टर की है, और वे उतना ही करेंगे जितना करने को उनसे कहा जाएगा। ऐसी स्थिति में हैडमास्टर एक हऊआ बन जाता है, जिससे डरते तो सब है, परन्तु जिसकी इज्जत कोई भी नहीं करता है।

हमारे यहाँ बच्चों के सीखने की गति में भी स्वतंत्रता होती है, यह उपसमूह व्यवस्था में दिखाई देता है, क्योंकि हमारा मानना है कि बच्चों में ज्ञानार्जन की सबसे बड़ी शर्त आजादी होती है। इन्हें एक समूह में बांध कर नहीं रखा जाता, बल्कि इनके सीखने की क्षमता के अनुसार बच्चों का उपसमूह बदलता रहता है।

जब बच्चों की किसी गतिविधि पर काम होता है तो यह नहीं कहा जा सकता कि उसकी अवधारणाएं पूरी तरह से स्पष्ट हो गई है। हमारी तरह की कक्षा [illegible] अपने से अधिक स्तर के बच्चों के साथ हो रहे काम [illegible] और जब वही काम उसके साथ हो रहा होता है तो उसमें ज्यादा स्पष्टता आती है और जब वही काम उनसे छोटे बच्चों के साथ होता है तो [illegible] अवधारणाएं और ज्यादा स्पष्ट हो जाती है। इस प्रकार बच्चा अपने साथियों से सीखता है, और उन्हें सीखने में मदद करता है।

मल्टी लेवल मल्टी ग्रेड (एमएल, एमजी)

मल्टी लेवल मल्टी ग्रेड (एमएल, एमजी)

एमएल, एमजी व्यवस्था में एक शिक्षक अलग–अलग उम्र के बच्चों को एक साथ पढ़ाता है, और बच्चें एक समय में अलग–अलग विषयों में अलग–अलग स्तर पर काम करते हैं।

एमएल, एमजी को मॉत्र शाला व्यवस्था के दृष्किोण से समझा जाता है, और यह उन छोटे स्कूलों में उपयोग किया जाता है, जहॉ एक–दो शिक्षक और पच्चीस–पचास बच्चे होते है, ताकि शिक्षक एक समय में एक से अधिक स्तरों के बच्चों को पढ़ा सके। लेकिन एमएल, एमजी इससे अधिक है, यह मजबूरी में की हुई शाला व्यवस्था नहीं है। इसे हम पर्याप्त बच्चे और शिक्षक होने पर भी अपनाते हैं।

हमारी शाला में प्राथमिक शिक्षण 3 समूहों में होता है। प्रत्येक समूह में 5–11 वर्ष के बच्चे हैं। एक समूह को एक शिक्षक सभी विषय पढ़ाता है। ये समूह अलग–अलग उपसमूहों मे बंटे हैं, और प्रत्येक

उपसमूह में समान स्तर के बच्चे होते हैं, ये उपसमूह अलग–अलग विषयों के लिए अलग हैं, बच्चों के उपसमूह उनकी सीखने की गति के अनुसार बदलते रहते हैं, क्योंकि हमारा मानना है कि बच्चों के सही विकास के लिए उनका अपने से बड़े–छोटे बच्चों के साथ मित्रता करना जरूरी होता है। अतः एमएल, एमजी की व्यवस्था अपनाने से बच्चे अपने से बड़े एवं छोटे बच्चों के साथ मित्रता करने से हिचकिचाते नहीं है, साथ ही यदि उन्हें किसी प्रश्न पर समस्या हो रही हो तो उसे वे बड़े बच्चों की मदद से आसानी से हल कर लेते है। हमारा मानना है कि जीवन के उन तमाम छोटे–बड़े अनुभवों एवं दिक्कतों जिनका सामना बच्चों को करना होता है, वे अपने बड़े मित्रों की मदद से ज्यादा आसानी से समझ सकेते हैं। अपने से बड़े और कुछ छोटे मित्रों के साथ रहना वैसा ही शिक्षाप्रद अनुभव होता है जैसा कि व्यस्क और प्रौढ़ शिक्षक के साथ काम करने से होता है, परन्तु कक्षायी व्यवस्था इसे असम्भव बनाती है।

हमारे यहां लाल पेन का इस्तेमाल नहीं होता

उदय सामुदायिक पाठशाला ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

हमारे यहां लाल पेन का इस्तेमाल नहीं होता

मुख्यधारा की शिक्षा व्यवस्था में लाल पेन के इस्तेमाल को बहुत पहले से ही बहुत महत्वपूर्ण माना गया है, कारण बच्चों को उनकी गलती बताना, उनकी कमजोरी को दर्शाना और रिपोर्ट कार्ड में यदि बच्चा फेल है तो उसे दर्शाना। पर हम यह जानना चाहते है, कि क्या बच्चों को उनकी गलतियॉं बताने से कहीं अच्छा उन गलतियों को सुधारना नहीं है। हम जब बच्चों की किसी गलती को देखते है तो हमे यह समझ में आता है, कि बच्चों को किस तरह के प्रश्न में समस्या हो रही है, इस वक्त हम उस गलती को लाल पेन से उजागर करना उचित नहीं समझते। बल्कि हमारे अगले दिन की कार्य योजना ही उन गलतियों को ध्यान में रखकर तैयार होती है, और अगले दिन शिक्षक बच्चों की समस्या को बातचीत या फिर अन्य तरीके से हल करने की कोशिश करते है। इससे बच्चा बिना गलती जाने ही उसे सुधार लेता है।

हमारे स्कूल में रिपोर्ट कार्ड पर भी लाल पेन का इस्तेमाल नहीं होता है, कारण स्कूल में समुदाय द्वारा बच्चों के लिए गए मुल्यांकन का मुख्य उद्देश्य यह जानना है, कि बच्चों ने अब तक क्या सीखा है, और हमारे स्कूल के रिपोर्ट कार्ड में भी इसी को दर्शाया जाता है, हमारे स्कूल के लिए रिपोर्ट कार्ड में बच्चे ने कितने अंक प्राप्त किए अथवा वह पास हुआ या फेल इन बातों को कोई महत्व नहीं दिया जाता है।

जाता है, क्योंकि हमारा मानना है कि स्कूल में हुई छः घण्टे की पढ़ाई बच्चों के लिए पर्याप्त होती है।

इस तरह हमारे स्कूल में बच्चे शिक्षा को बोझ नहीं बल्कि आनन्द का स्त्रोत मानते है।

हमारे यहाँ स्कूल बैग

हमारे यहॉ स्कूल बैग नहीं हैं।

आज की मुख्यधारा की शिक्षा व्यवस्था के अन्दर शिक्षा बच्चों के लिए आनन्द का स्त्रोत नहीं बल्कि बोझ बन गई है। सुबह स्कूल जाने के लिए बच्चे एक दिन पहले शाम को अपना स्कूल बैग ठीक करते हैं, इस बैग में आठ विषयों की किताबें, कापी, रफ कापी, रबर, पेंसिल, पेन होता है। इन सारी चीजों को बैग में रखने के बाद इसका वजन इतना अधिक हो जाता है कि बच्चा स्वयं इसे उठाने में असमर्थ होता है।

ऐसा देखा गया है, कि स्कूल की पुस्तकें आज इतनी ज्यादा हैं, कि उन्हें ढोने के लिए अब बस्ते के स्थान पर पेटी ले जानी पड़ती है। साथ ही आज स्कूल और बच्चों के माता–पिता बच्चों को अधिकाधिक व्यस्त रखने का प्रयास करते है, ताकि बच्चे शरारत न करने पाएं या खेलने में कम से कम समय दें। इसके लिए बच्चों को स्कूल से मिलने वाले गृहकार्य इतने अधिक होते है कि छुट्टी होते ही घर जाना चाहते है, कारण अन्हें अगले दिन के लिए आज ही सारा गृहकार्य खत्म करना होता है, इस तरह से बच्चे इतने व्यस्त हो जाते है कि उनके

पास किसी और काम के लिए समय ही नहीं
देखा गया है कि स्कूल जितना ही व्यवस्थित
मिलने वाले काम उतना ही ज्यादा होता हैं।
बच्चों के लिए एक विवशता हो गई है।

परन्तु "उदय सामुदायिक पाठशाला" में
नहीं आते है, कारण यहॉ बच्चों के लिए कि
स्कूल में ही उपलब्ध होती है। साथ ही हमारी
प्रकार की है कि हर बच्चे के लिए एक अलग
नहीं होती है। बच्चे स्कूल सिर्फ अपनी रोटी ले
उन्हें स्कूल में ही उपलब्ध होती है जिनका इस
स्कूल में ही जमा कर देते है। बच्चे इन ची
इस्तेमाल करते है। जैसे– यदि पॉच बच्चों के
पॉचों मिलकर इसका इस्तेमाल करते है, और
करा देते हैं। साथ ही हमारे स्कूल में बच्चों

उदाहरणस्वरूप :– मुख्यधारा की स्कूलों में यदि गणित का विषय चल रहा है, शिक्षक और बच्चे इस पर अभी और 2–3 घंटे देना चाहते है, परन्तु समय समाप्त होने की घंटी बज जाने के कारण उन्हें वह विषय वहीं छोड़ देना पड़ता है, और संस्कृत के श्लोक (दूसरे विषय की तैयारी) याद करने पड़ते है।

परन्तु "उदय सामुदायिक पाठशाला" में शिक्षक एवं बच्चे किसी विषय पर वे जितना चाहे उतना समय दे सकते है, क्योंकि उनमें समय समाप्त होने का डर नहीं होता है।

हमारे स्कूल में घंटी नहीं है

हमारे स्कूल में घंटी नहीं है

साधारणतया स्कूलों में दिन की शुरूआत ही घंटी के साथ होती है, सबसे पहले प्रार्थना की घंटी, फिर प्रार्थना समाप्त होने की घंटी, पहला विषय शुरू होने की घंटी, दूसरा विषय शुरू होने की घंटी, टीफिन करने की घंटी, खेलने की घंटी, घर जाने की घंटी आदि। इस तरह बच्चों के पूरे दिन को इन घंटियों के साथ शुरू करके इन्ही के साथ खत्म कर दिया जाता है, कहने का तात्पर्य यह है कि बच्चों के हर काम को करने के लिए एक समय निर्धारित कर दिया जाता है, जिस कारण बच्चा शिक्षकों द्वारा निश्चित उस काम को मन हो या न हो उस वक्त पर करता है, और रूचि होने के बावजूद उस काम को उतनी ही देर तक कर सकता है, जितना समय उस काम के लिए निर्धारित किया गया है। परिणामस्वरूप कई बार ऐसा होता है कि बच्चे किसी प्रश्न पर अटके होते है पर चूंकि समय समाप्त हो चुका होता है वे उस समस्या को हल नहीं कर पाते और उन्हें दूसरा विषय

पढ़ना पड़ता है। इस तरह बच्चों की रूचि को अघात तो लगता ही है साथ ही बच्चों और शिक्षकों का तालमेल भी टूट जाता है।

"उदय सामुदायिक पाठशाला" में बच्चों एवं शिक्षकों की इसी समस्या पर ध्यान देते हुए घंटी प्रथा को नहीं अपनाया गया है। हमारा मानना है, कि बच्चों की रूचियों को समय में निर्धारित करके एक पांबदी के माहौल में पढ़ाने से कही बेहतर उन्हें स्वतंत्र माहौल में पढ़ाना है। हमारा मानना है कि यदि हम बच्चों को उनकी इच्छा के अनुसार पढ़ने की आजादी देंगे तो वह उन चीजों को कहीं बेहतर तरीके से सीख सकेंगे। हमारे यहां बच्चों पर समय की कोई पाबंदी नहीं होती है, बच्चें किसी काम को तब तक कर सकते है जब तक वे उसे करना चाहते है इसका परिणाम यह होता है, कि वे पढ़ने में रूचि तो लेते ही है साथ ही इसका आनंद भी उठाते है। अतः कहने का तात्पर्य यह है, कि समय की स्वाधीनता ही बच्चों में ज्ञानार्जन की सबसे बड़ी शर्त है।

हमारे स्कूल में पाठ्यपुस्तके नहीं है।

हमारे स्कूल में पाठ्यपुस्तके नहीं है।

"उदय सामुदायिक पाठशाला" में पाठ्यपुस्तकों का उप
नहीं किया जाता इसे जानने के पहले हमें इसके उपयोग क
होगा। हमें जानना होगा, कि इसे किस तरह तैयार किया जा
जिन स्कूलों में इसका उपयोग होता है, वहां इसके कारण
है।

एक अध्ययन के दौरान पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों के
से यह जानने की चेष्टा की गई कि वे कैसे बनाते है प
जबाव था कि हमे छुटपन में ही बच्चों को बहुत कुछ पढा
ताकि वे कदम से कमद मिलाकर आज के ज्ञान विज्ञान की अ
धारा के साथ चल सके।

आज हमारे देश की तुलना उन देशों से की जा रही है
गुफाओं से निकल रहे थे जब हमारे यहां साहित्य का विकास
था। और आज हमें उनके साथ चलना सीखना है। आज जि
में इसका इस्तेमाल होता है वहां साल के शुरू में ही

क्या–क्या और कितने समय में पढ़ाना है इसे निश्चित कर लिया ज
है और शिक्षक निश्चित अवधि के अन्दर इसे पूरा करने की को
करता है। इस प्रक्रिया में शिक्षक पहले बच्चों को पाठ पढ़वाता है,
फिर पाठ के अन्त में दिए गए प्रश्नों को हल करवाता है। बच्चे
रटते है और परीक्षा में हूबहू लिखने का प्रयास करते है, इससे
की रचनात्मक क्षमता को तो बढ़ावा नहीं ही मिल पाता है, साथ
उन्हें बना बनाया मिले इसकी भी आदत पड़ जाती है।

आज पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से बच्चों को तरह–तरह
जानकारियां दी जाती है जैसे– दुनिया की सबसे बड़ी मछली कौन
है? सबसे छोटा पक्षी कौन सा है? मेघालय की राजधानी क्या
इत्यादि। देखते ही देखते बच्चों का बचपन एक अर्नगल तथ्य बन
रह गया है, जिसमें कहीं बचपन का उल्लास एवं बचपन की स्वच्छ
के अवशेष भी नहीं दिखाई देते। आज आप कहीं भी जाइये
आपको तरह–तरह के तथ्य रटते एवं शिक्षकों को सुनाते दिखाई
इस तरह आज बच्चों का दिमाग एक टेलिफोन डायरेक्ट्री बन गय
जिसमें असंख्य किस्म की सूचनाएं दर्ज है।

आज पाठ्यपुस्तको के इस्तेमाल से शिक्षक को भी अ
क्या और कैसे पढ़ाना है, इस पर विचार नहीं करना पड़ता
ही ये शिक्षकों को भी स्वतंत्र रूप से कार्य करने से रोकती
की शिक्षा प्रणाली में यदि शिक्षक अतिरिक्त सामग्री से
चाहता है, तो इसे उच्च अधिकारियों द्वारा नियमों का उल्ल
जाता है, अतः शिक्षक पाठ्य पुस्तकों को ही एक मात्र साध
काम करने लगता है और इससे बाहर निकलने का प्रयास
देता है। इससे शिक्षक का कार्य उबाऊ एवं नीरस हो जात
वह कुछ भी नया करने का प्रयास छोड़ देता है, इस त
शिक्षक एवं बच्चों दोनों के लिए ही एक आफत बन जाती हैं।

इस तरह के शिक्षा प्रणाली की एक और समस्या यह
कि पाठ्यपुस्तकों में किसी भी घटना को सिर्फ एक दृष्टिको
दिखाया जाता है, जबकि सच्चाई यह है कि एक ही घटना
दृष्टिकोणों से समझा जा सकता है, परन्तु शिक्षक
पाठ्यपुस्तक को ही सही मानकर उसे वैसे ही बच्चों के
करता है, इसका परिणाम यह होता है कि अन्य दृष्टिकोणों

काम नहीं होता है, अतः यह पाठ्यपुस्तकें बच्चों एवं शिक्षकों की निर्धारित करती है।

बच्चों एवं शिक्षकों की इन्ही समस्याओं को ध्यान में रखते "उदय सामुदायिक पाठशाला" में पाठ्यपुस्तकों का इस्तेमाल नहीं है। अब आप यह सोचेंगे कि बिना पुस्तकों के काम कैसे होगा? आपको बता दे, कि हम पाठ्यपुस्तकों का विरोध करते है, पुस्तकों नही।

हमारे यहां भाषा शिक्षण सीखाने के लिए स्थानीय शब्दों से शुरू किया जाता है, इसे जानना, समझना बच्चों के लिए आसान है, इन्ही शब्दों की ध्वनी तोड़कर वर्णों की पहचान की जाती है, वर्णों को जोड़कर शब्द और वाक्य बनाने पर शिक्षक और बच्चे मि प्रयास करते है, और आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक शिक्षण सामग्री बनाता है, पढ़ना और लिखना सीखने के पश्चात बच्चों को अपनी के अनुसार किताबें पढ़ने की आजादी होती है और शिक्षक बच्चों चुनी हुई कहानियों से ही अभ्यास प्रश्न एवं अन्य कार्य करवात

इसी प्रकार अन्य विषयों में भी स्थानीय ज्ञान व स्थानीय र
मदद से कार्य करवाया जाता है। अभ्यास कार्य के लिए बच
की मदद लेते है और जरूरत पड़ने पर शिक्षक अभ्यास पत्र
ही बनाता है, साथ ही शिक्षक किसी सामग्री या टी. एल.
जरूरत पड़ने पर उसे भी तैयार करता है। उपरोक्त कार्य शि
की छुट्टी के बाद अपनी योजना (दैनिक) में प्रतिदिन करत
प्रकार पाठ्यपुस्तकों के बिना हमारे स्कूल में कार्य करवाया जा

साथ ही हमारा यह भी मानना है, कि ज्ञान का
सूचना एवं जानकारी के रूप में लिया जाए तो ज्ञान का दाय
सिमट कर छोटा हो जाता है, और ज्ञान का ऐसा कोई अर्थ
जिससे संतोष हो संभव ही नहीं हो पाता। इसीलिए हम मान
ज्ञान की खोज एक ताजे मन से खुली तबीयत से करनी चा
बच्चों की अवधारणाएं तो स्पष्ट होती ही है, साथ ही उनकी
का वर्धन भी होता है।

हमारे यहां गणवेश नहीं है।

हमारे यहां गणवेश नहीं है।

स्कूल गणवेश को लेकर अलग–अलग मत मिलते है। अ
स्कूलों में तो गणवेश को बड़ी गम्भीरता से लिया जाता है।
जब उनसे पूछा जाता है, कि गणवेश लागू करने से क्या फाय
है। तो निम्न कारण नजर आते है। एक गणवेश होगी तो बच्चे
में अच्छे लगेंगे और पढने वाले बच्चों को दूर से ही पहच
सकेगा। पाठशाला (स्कूल) की नजर में सभी समान है। इस
गणवेश प्रमाणित करती है। गणवेश जाति और धर्म का भेद मि
गणवेश से स्कूल की पहचान होती हैं।

उपरोक्त दलीलों के आधार पर लोग गणवेश को उचित
है। लेकिन क्या गणवेश से बच्चे सुन्दर दिखते हैं? हमारे विचा
बच्चे सुन्दर होते है। इससे आगे तो मामला साफ सफाई का है
तक दूर से पहचानने की बात है, तो पहचान कर हम करेंगे भ
क्या हम बच्चों को पढने वाले और ना पढने वाले बच्चों में
करना चाहते है। एक वर्दी पहनाकर हम क्या साबित करना च

बच्चों को उनका शिक्षक बिना वर्दी के नहीं जान पाता तो हम समझेंगे कि शिक्षक और बच्चे की कक्षा में या स्कूल में बातची नहीं होती है।

जहां तक समानता का मामला है, तो क्या एक रंग के पहना देने से सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक असमानताएँ खत्म हो है? क्या छोटे–बड़े और अमीर– गरीब का भेद मिट जाता है? हम नहीं मानते क्योंकि एक रंग होने पर भी जहां अमीर का बच्चा कपड़ों को नील डालकर उनपर स्त्री करवाके पहनेगा। वहीं गरी बच्चा टेरिकोट के कपड़े को बिना नील और बिना स्त्री के प आएगा। सम्भव है कि उसके कपड़ कोहनी, घुटनों और कुल्हों घिस–घिस कर फट गए हों। ऐसे में आर्थिक समानता की ब खोखली दिखती है। अब धार्मिक समानता की बात है, तो उस सभी को स्वतंत्रता दी गई है। जैसे– सिक्खों को बाल और क कडा रखने की। हम यह भी देखते है कि वर्दी को पब्लिक स्क जितनी कठोरता से लागू किया जाता है, उसकों देखते हुए त होना ही नहीं चाहिए। अक्सर गणवेश के अभाव में बच्चों को प्र

किया जाता है। स्कूल से भगा दिया जाता है। उसे कक्षा में त
नहीं बैठने देते जब तक वह गणवेश पहनकर नहीं आता। शिक्ष
के आरंभिक दिनों में सभी को स्कूली गणवेश सिलवाने पर दबाव
जाता है। इन सब के कारण बच्चों को शारीरिक और मानसिक
तो सहनी ही पड़ती है। साथ में शिक्षण से भी वंचित रखा जा
यहाँ ऐसा लगता है मानों विद्यालय गणवेश विघा से अधिक जर
गई है। इसी गणवेश के कारण गरीब और पिछड़े बच्चे स्कूल न
पाते है। उनके पास घर और स्कूल के लिए अलग–अलग कप
होते जिसके कारण एक जोडी कपड़ें से ही काम चलाना पड
ऐसे में विद्यालय गणवेश का दबाव पड़ने पर माता–पिता बच
गणवेश तो बनवा देते हैं पर दूसरे कपड़े जो घर व आने जाने
हैं, उनको नहीं बनवाते। ऐसे में बच्चा हर समय हर जगह वि
गणवेश में ही नजर आता है। शादी विवाह, तीज त्यौहारों के
पर भी बच्चों को विद्यालय गणवेश में देखा जा सकता है। उनकी
मजबूरी के कारण बच्चे को लम्बे समय तक अपनी पसन्द व
समझौता करना पड़ता है। बच्चे का हर अवसर पर विद्यालय गण

होना उसकी आर्थिक मजबूरी को तो दर्शाता ही है साथ में गणवे
लिए दबाव को भी प्रमाणित करता है। यह दबाव ही तो है कि
हटते ही बच्चे रंगों को धारण कर लेते है। गुरूवार को गणवेश
सफाई व अन्य कारणों से अवकाश होने पर बच्चे अपनी सम्पन्न
रूचि का खुलकर प्रदर्शन करते हैं जब ये बच्चे कॉलेज में जाते
किसी गणवेश का दबाव नहीं होता और वे उसे अस्वीकार कर देते
हमारा मानना है, कि गणवेश पाठशाला में अनिवार्य नही होनी चा
पाठशाला में सिर्फ शिक्षण ही अनिवार्य होना चाहिए। गणवेश शिक्ष
कहीं सहायक नहीं है। हमें पाठशाला को सिर्फ पाठशाला रखना च
सैनिक छावनी नहीं बनानी चाहिए। इसलिए हमारे यहां गणवेश
है।